



H5
17/10/89

भारत का राजपत्र

The Gazette of India

असाधारण
EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उद्योग (1)
PART II—Section 3—Sub-section (1)

प्राधिकार से प्रकाशित
PUBLISHED BY AUTHORITY

स. 570] नई दिल्ली, मंगलवार, नवम्बर 1, 1988/कार्तिक 10, 1910
No. 570] NEW DELHI, TUESDAY, NOVEMBER 1, 1988/KARTIKA 10, 1910

इस भाग में भिन्न पृष्ठ संख्या वाली जाती है जिससे यह अलग संकलन के रूप में
रखा जा सके

Separate Paging Is given to this Part in order that it may be filed as a
separate compilation

गृह भवानी

नई दिल्ली, 1 नवम्बर, 1988

प्रधिकार

मा.का.नि. 1052(प्र) :- केंद्रीय मरकार, पंजाब पुनर्गठन प्रधि-
नियम, 1966 (1966 का 31) की धारा 87 द्वारा प्रदत्त शक्तियों
का प्रयोग करते हुए, इस प्रधिकार की तारीख को पंजाब राज्य में
यशप्रद इतिहास अनुसूची के स्वरूप (1) में विनियिट प्रधि-
नियमियों को, अनुसूची के स्वरूप (2) में की भव्यानी प्रविष्टियों में
विनियिट उपलब्धों के अवधि रहने द्वारा, वंशीय संघ राज्य थोड़ा को
विस्थापित करता है।

प्रभुनी

अधिनियमिति:

उपलब्ध

(1)

1. पंजाब साधारण विधय-कर
(मंगोधन) विधिनियम, 1973
(1973 का पंजाब अधिनियम
म. 11)

1. धारा 2 में, "पंजाब साधारण
विधय-कर अधिनियम, 1948",
शब्दों और अंकों के स्थान पर
"वंशीय संघ राज्य थोड़ा में यथा"
विवृत पंजाब साधारण विधय-
कर अधिनियम, 1948" प्रबद्ध
और अंक रखे जाएंगे।

(1)

(2)

- | | |
|---|---|
| 2. पंजाब साधारण विधय-कर दूसरा
(संगोधन) अधिनियम, 1973
(1973 का पंजाब अधिनियम
म. 29) | 2. प्राचा 3 का सोप पिया जाएगा।
धारा 2 में, "पंजाब साधारण
विधय-कर अधिनियम, 1948"
शब्दों और अंकों के स्थान पर
"वंशीय संघ राज्य थोड़ा में यथा-
प्रवृत्त पंजाब साधारण विधय-
कर अधिनियम, 1948" प्रबद्ध
और अंक रखे जाएंगे। |
| 3. पंजाब साधारण विधय-कर
(मंगोधन और विधिमास्यकरण)
अधिनियम, 1976 (1976
का पंजाब अधिनियम म. 11) | 1. धारा 1 में, उपधारा (2) का
सोप किया जाएगा।
2. धारा 2 में, "पंजाब साधारण
विधय-कर अधिनियम, 1948"
शब्दों और अंकों के स्थान पर
"वंशीय संघ राज्य थोड़ा में यथा-
प्रवृत्त पंजाब साधारण विधय-
कर अधिनियम, 1948" प्रबद्ध |

(1)	(2)	(1)	(2)
	पंजाबीयम्, 1948 शब्द और भंक रखे जाएंगे ;		"चंडीगढ़ संघ राज्य सेक्रेटरी में पंजाब-प्रवृत्त पंजाब साधारण विक्रम-कर प्रधिनियम, 1948" शब्द और भंक रखे जाएंगे ।
	(ii) "और सरैव हुआ समझा जाएगा" शब्दों का लोप किया जाएगा ।		3. धारा 5 में, "राज्य मनकार" शब्दों के स्थान पर "संविचार के प्रनुभ्येत्र 239 के अन्तीम राज्य-तसि, द्वारा नियुक्त प्रशस्तक" शब्द रखे जाएंगे ।
	3. धारा 3 में, "और सरैव हुआ समझा जाएगा" शब्दों का लोप किया जाएगा ।		उपाधन-त्रै-।
4. पंजाब साधारण विक्रम-कर (संशोधन और विधिमान्यकरण) प्रधिनियम, 1978 (1978 का पंजाब प्रधिनियम सं. 2)	1. धारा 1 में, उपधारा (2) का लोप किया जाएगा । 2. धारा 2 में, "पंजाब साधारण विक्रम-कर प्रधिनियम, 1948" शब्दों और अंकों के स्थान पर "चंडीगढ़ संघ राज्य सेक्रेटरी में पंजाब प्रवृत्त पंजाब साधारण विक्रम-कर प्रधिनियम, 1948" शब्द और अंक रखे जाएंगे । 3. धारा 3 में, (i) "भ्रात्री, 1973 के पहले दिन" शब्दों और अंकों के स्थान पर, "पंजाब साधारण विक्रम-कर (संशोधन और विधिमान्यकरण) प्रधिनियम, 1978 के चंडीगढ़ संघ राज्य सेक्रेटरी विस्तारित किए जाने की तारीख" शब्द और अंक रखे जाएंगे । (ii) "राज्य" शब्द के स्थान पर, जहाँ जहाँ वह धारा 4 के "चंडीगढ़ संघ राज्य सेक्रेटरी" शब्द रखे जाएंगे ।	चंडीगढ़ संघ राज्य सेक्रेटरी पर पंजाब साधारण विक्रम-कर (संशोधन) प्रधिनियम, 1973 (1973 का पंजाब प्रधिनियम सं. 14)। पंजाब साधारण विक्रम-कर प्रधिनियम, 1948 का संशोधन करने के लिए प्रधिनियम । भारत गणराज्य के खौलीसवें वर्ष में पंजाब राज्य विभान-गंडल धारा नियमित्रित कर्त्ता में वह प्रधिनियमित होता है:- 1. संक्षिप्त नाम--इस प्रधिनियम का संक्षिप्त नाम पंजाब साधारण विक्रम-कर (संशोधन) प्रधिनियम, 1973 है । 2. 1948 के पंजाब प्रधिनियम 66 की धारा 4 का संशोधन-चंडीगढ़ संघ राज्य सेक्रेटरी में पंजाब प्रवृत्त पंजाब साधारण विक्रम-कर प्रधिनियम, 1948 की उपधारा (5) में,- (i) छठ (छब्बी) में, "25,000 रुपये" अंकों और शब्द के स्थान पर, "40,000 रुपये" अंक और शब्द रखे जाएंगे; और (ii) छठ (छ) में, "40,000 रुपये" अंकों और शब्द के स्थान पर, "1,00,000 रुपये" अंक और शब्द रखे जाएंगे ।	
	4. धारा 5 में, "पंजाब साधारण विक्रम-कर (संशोधन और विधिमान्यकरण) प्रधिनियम, 1978 के प्रारम्भ के पूर्व" शब्दों, अंकों और कोष्ठकों के स्थान पर जहाँ जहाँ वह धारा 4 के "पंजाब साधारण विक्रम-कर (संशोधन और विधिमान्यकरण) प्रधिनियम, 1978 के चंडीगढ़ संघ राज्य सेक्रेटरी विस्तारण के पूर्व" शब्द, कोष्ठक और अंक रख जाएंगे ।		उपाधन-2
	5. धारा 8 और 9 का लोप किया जाएगा ।		चंडीगढ़ संघ राज्यसेक्रेटर पर पंजाब साधारण विक्रम-कर (दूसरा संशोधन) प्रधिनियम, 1973 (1973 का पंजाब प्रधिनियम सं. 29)
5. पंजाब साधारण विक्रम-कर (दूसरा संशोधन) प्रधिनियम, 1978 (1978 का पंजाब प्रधिनियम सं. 26)	1. धारा 1 में, उपधारा (2) का लोप किया जाएगा । 2. धारा 2 में, "पंजाब साधारण विक्रम-कर प्रधिनियम, 1948" शब्दों और अंकों के स्थान पर	पंजाब साधारण विक्रम-कर प्रधिनियम, 1948 का संशोधन करने के लिए प्रधिनियम । भारत गणराज्य के खौलीसवें वर्ष में पंजाब राज्य विभान-गंडल द्वारा नियमित्रित कर्त्ता में वह प्रधिनियमित होता है:- 9. संक्षिप्त नाम--इस प्रधिनियम का संक्षिप्त नाम पंजाब साधारण विक्रम-कर (दूसरा संशोधन) प्रधिनियम, 1973 है । 2. 1948 के पंजाब प्रधिनियम 66 में नई धारा 3 का अनुस्यापन :-चंडीगढ़ संघ राज्यसेक्रेटर में पंजाबप्रवृत्त पंजाब साधारण विक्रम-कर प्रधिनियम, 1948 की धारा 3 के प्रवक्तव्य विनियित धारा अंक संशोधन की जाएगी, अथवा:-	"९. प्रतिशिक्षण कर का उद्घोषणा--(1) इस प्रधिनियम में किसी वाक के होते हुए भी, किसी व्योहारी फौ कराईये भावर्ष, पर प्रतिशिक्षण कर जो उसके द्वारा इस प्रधिनियम के प्रधीन देय कर के दो प्रतिशत की दर से संगणित किया जाएगा ॥, उद्घोषण और संशोधन किया जाएगा ।

परन्तु इस विविनियम के प्रधान बेंय सकलित कर और अधिभार देने माल की बाबत जिसे केंद्रोंव विवादकर अधिनियम, 1956 भी धारा 14 द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार या बाणिज्य में विशेष महूव का घोषित किया गया है, उस अधिनियम की धारा 15 द्वारा नियत दर से अधिक नहीं होगा।

(2) उपधारा (1) में अन्यथा उपबंधित के सिवाय, इस अधिनियम के उपबंध जहाँ तक हो सके, उपधारा (1) के अधीन उद्घाटनीय प्रतिरिक्त दर के संबंध में ऐसे लाग़ होते जैसे वे इस अधिनियम के किसी अन्य उपबंध के अधीन उद्घाटनीय कर के संबंध लाग़ होते हैं।

उपाधारा—3

बंडीगढ़ संघ राज्यक्रेत्र की विधानसभारित पंजाब साधारण विक्रय-कर (संशोधन और विधिमान्यकरण) अधिनियम, 1979 (1979 का पंजाब अधिनियम सं. 11)

पंजाब साधारण विक्रय-कर अधिनियम, 1948 का संशोधन करने के लिए अधिनियम।

भारत गणराज्य के उत्तरीसिंह वर्ष में पंजाब राज्यविधान-मंडल द्वारा निम्नलिखित रूप में यह अधिनियमित हो :—

1. संक्षिप्त नाम और प्रारम्भ (1) इस अधिनियम का संक्षिप्त नाम पंजाब साधारण विक्रय-कर (संशोधन और विधिमान्यकरण) अधिनियम, 1976 है।

2. 1948 के पंजाब अधिनियम 46 की धारा 5 का संशोधन :—बंडीगढ़ संघ राज्य क्षेत्र में यथा प्रवृत्त पंजाब साधारण विक्रय-कर अधिनियम, 1948 की (जिसे इसमें इसके पश्चात् मूल अधिनियम कहा गया है) धारा 5 के पहले परस्तुत में, "विनाम-बस्तुओं" शब्द का लाप किया जाएगा।

3. 1948 के पंजाब अधिनियम 46 से उपबंध प्रत्यक्षी के का संशोधन :—मूल अधिनियम में उपबंध प्रत्यक्षी के में "विनाम-बस्तुएं" शब्द का लाप किया जाएगा।

उपाधारा—4

बंडीगढ़ संघ राज्य क्षेत्र की यथा विस्तारित पंजाब साधारण विक्रय-कर (संशोधन और विधिमान्यकरण) अधिनियम, 1978 (1978 का पंजाब अधिनियम संख्या 2)

पंजाब साधारण विक्रय-कर अधिनियम, 1948 का संशोधन करने के लिए अधिनियम।

भारत गणराज्य के उत्तरीसिंह वर्ष में पंजाब राज्य विधान मंडल द्वारा निम्नलिखित रूप में यह अधिनियमित हो :—

1. संक्षिप्त नाम और प्रारंभ—(1) इस अधिनियम का संक्षिप्त नाम पंजाब साधारण विक्रय-कर (संशोधन और विधिमान्यकरण) अधिनियम, 1978 है।

2. 1948 के पंजाब अधिनियम 46 का संशोधन :—बंडीगढ़ संघ राज्य क्षेत्र में यथा प्रवृत्त पंजाब साधारण विक्रय-कर अधिनियम, 1948 में (जिसे इसके पश्चात् मूल अधिनियम कहा गया है) "भूम्यक उत्पादक और करान्दान अधिकारों" क्षेत्रों के स्थान पर जहाँ जहाँ वे भूमि हैं, "उत्पादक और करान्दान अधिकारों" नाम है जहाँ।

3. 1948 के पंजाब अधिनियम 46 की धारा 5 का संशोधन :—मूल अधिनियम की उपधारा 5 की उपधारा (1-क) के पश्चात् निम्नलिखित उपाधारा अन्तर्राष्ट्रीय की जाएगी, अधिकृत :—

"(1-क) बंडीगढ़ संघ राज्य क्षेत्र का पंजाब साधारण विक्रय-कर (संशोधन और विधिमान्यकरण) अधिनियम, 1978 के विस्तारण की तारीख से ही उपधारा (1) के अधीन मारगरीत पर कर उसके विक्रय के पहले प्रक्रम पर उद्यग्नीत किया जाएगा जो प्रक्रम,—

(क) ऐसे व्योहारी को दशा में जो बंडीगढ़ संघ राज्यक्षेत्र से बाहर के किसी स्थान से बंडीगढ़ संघ राज्य क्षेत्र में मारगरीत लाता है, विक्रय का यह प्रक्रम होगा जब ऐसा व्योहारी बंडीगढ़ संघ राज्य क्षेत्र के भीतर पहली बार मारगरीत का विक्रय करता है;

(ब) ऐसे व्योहारी को दशा में जो बंडीगढ़ संघ राज्य क्षेत्र के भीतर मारगरीत करता है, विक्रय का यह प्रक्रम होगा जब ऐसा व्योहारी बंडीगढ़ संघ राज्य क्षेत्र में पहली बार मारगरीत का विक्रय करता है,

(ग) किसी व्यन्य व्योहारी को दशा में जिसने पूर्ववर्ती रूप से निविष्ट व्योहारी से मारगरीत का क्रय नहीं किया है, वह प्रक्रम होगा जिस पर ऐसा व्योहारी बंडीगढ़ संघ राज्य क्षेत्र में पहली बार मारगरीत का विक्रय करता है:

परन्तु पश्चात्वर्ती प्रक्रम पर भारगरीत के किसी विक्रय को इस अधिनियम के अधीन कर से तब तक सूच प्राप्त नहीं होगी जब तक कि उसे पश्चात्वर्ती प्रक्रम पर विक्रय करने वाला व्योहारी विहित प्रत्येक और रोति में उस रजिस्ट्रीकूट व्योहारी द्वारा जिससे मारगरीत क्रय की गई थी, सम्यकतः भरा गया और हस्ताक्षरित प्रमाणपत्र निर्धारण अधिकारी को प्रत्युत नहीं कर देता है।"

4. 1948 के पंजाब अधिनियम, 46 की धारा 10 का संशोधन :—मूल अधिनियम की धारा 10 की उपधारा (4) में "जिस उत्पादक और करान्दान अधिकारों" क्षेत्रों के स्थान पर "जिस उत्पादक और करान्दान अधिकारों" क्षेत्र एवं जारीय हो :—

5. 1948 के पंजाब अधिनियम में नई धारा 11कक्ष का अस्त-स्थापन—मूल अधिनियम की धारा 11कक्ष के पश्चात् निम्नलिखित धारा अन्तर्राष्ट्रीय की जाएगी अर्थात् :—

"11कक्षक का मारगरीत पर कर के कुछ क्षेत्रों का पुनर्विकास की विधियों का विधिमान्यकरण—

(1) इस अधिनियम में किसी बात के होने से दो विधियों का विधिमान्यकरण बंडीगढ़ संघ राज्य क्षेत्र का पंजाब साधारण विक्रय-कर (संशोधन और विधिमान्यकरण) अधिनियम 1976 के विस्तारण के पूर्व किए गए ऐसे विधियों पुनर्विकास का जो पूर्वोक्त अधिनियम द्वारा यथा संशोधित इस अधिनियम के उपबंधों के अनुसूच वही है पुनर्विकास करेगा और पहले किए गए ग्रामीण के फैलाव या पुनर्विकास करने वाला ऐसा ग्रामीण करेगा जो पहले किए गए ग्रामीण की पूर्वोक्त अधिनियम द्वारा यथा संशोधित इस अधिनियम के उपबंधों के प्रत्युत बदलने के लिए आवश्यक हो :—

परन्तु ऐसा श्री धारो डम प्राप्त कीसी व्योहारी के विषद् उपका कुराई के विवरण दिए जाएंगे।

(2) किसी व्यायालय या किसी भूम्य प्राधिकारी के तप्रतिशूल किसी निर्णय दिनी या भादेश में किसी बात के होने हुए और किन्तु उपभारण (1) के उपबंधों के अधीन रहने हुए चंडीगढ़ संघ राज्य क्षेत्र को पंजाब साधारण विक्रयकर (संगोष्ठन और विधिमाल्यकरण) प्रधिनियम 1978 के विस्तारण के पूर्व इस प्रधिनियम के उपबंधों के अधीन मारगोन की बाबत किया गया था किए जाने के लिए लालीवित किसी कर को कोई निर्धारण पुनः निर्धारण उद्घाटन या संग्रहण नहीं है। इस प्रधिनियम 1978 के उपबंधों के अधीन रहने हुए विधिमाल्यकरण (संगोष्ठन और विधिमाल्यकरण) प्रधिनियम 1978 द्वारा यथा संशोधित इस प्रधिनियम के अधीन यह गई थी।

(3) संबंधों को दूर करने के लिए यह धोखिन किया जाता है कि उपभारण (2) की किसी बात का यदृ पर्यंत नहीं नयाँ जाएगा कि यह किसी व्यक्ति को—

(क) इस प्रधिनियम और उसके अधीन बताए गए नियमों के उपबंधों के अनुसार किसी अधिक के लिए मारगोन पर कर के निर्धारण पुनः निर्धारण उद्घाटन या संग्रहण को प्रत्यनगत करने से या—

(ख) पंजाब साधारण विक्रयकर (संगोष्ठन और विधिमाल्यकरण) प्रधिनियम 1978 द्वारा यथा संशोधित प्रधिनियम के अधीन उससे शोध्य रकम से अधिक उसके द्वारा संवत्त किसी कर के प्रतिविधि का रद्दवा करने से निर्धारित करता है।"

6. 1948 के पंजाब प्रधिनियम 46 की ओर 14-व्य का संशोधन:— मूल प्रधिनियम की धारा 14-व्य की उपधारा (6) के परन्तु यह मैं “जिन का उत्पादशुल्क और कर अधिकारी” शब्दों के स्थान पर “हिना का मारसाधक उत्पादशुल्क और कराधान आयुक्त” एवं रखे जाएँ।

7. 1948 के पंजाब प्रधिनियम 46 की धारा 23 का संशोधन:— मूल प्रधिनियम की धारा 23 की उपधारा (2) “उत्पादशुल्क और कराधान अधिकारी के रेंक का योद्धों के स्थान पर उत्पादशुल्क और कराधान प्रधिकारी से प्रतिक्रिया रेंक का” एवं रखे जाएँ।

उपांत्य—५

चंडीगढ़ संघ राज्य को यथा विस्तारित पञ्चाव साधारण विक्रयकर (मूल संशोधन) प्रधिनियम, 1978 (1978 का पंजाब प्रधिनियम संख्या 26)

पंजाब साधारण विक्रयकर प्रधिनियम, 1948 का संशोधन करने के लिए प्रधिनियम

भारत गणराज्य के उनलीसवें वर्ष में पंजाब राज्य विधान मंडल द्वारा निम्नलिखित रूप में यह प्रधिनियम हो:—

1. संक्षिप्त नाम और प्रारम्भ:— (1) इस प्रधिनियम का भंक्षिप्त नाम पंजाब साधारण विक्रयकर (हिनीय संशोधन) प्रधिनियम, 1978 है।

(2) चंडीगढ़ संघ राज्य को यथा विस्तारित पंजाब साधारण विक्रयकर प्रधिनियम, 1948 की (जिसे इसमें इसके पश्चात् मूल प्रधिनियम कहा गया है) धारा 11 की उपधारा (7) के स्थान पर निम्नलिखित उपधारा रखी जाएगी, अर्थात्:—

"(7) इस प्रधिनियम के अधीन देय किसी कर, शारिरक या धारा की अन्दर का अधिकारी द्वारा उत्तरी तक जो विधिन

प्राधिकारी द्वारा इस प्रयोजन के लिए जारी की गई सूचना में विनियमित की जाए, विहित रीत में संदाय किया जाएगा और इस प्रकार विनियमित तारीख ऐसी सूचना की सामीक्षा की जारीख से पत्रहृ दिन से अन्यून और हीस दिन से अनधिक नहीं होगी:

परन्तु निर्धारण प्राधिकारी, जिसे के भारसाधक सहायक उत्पादशुल्क और कराधान आयुक्त के पूर्वानुमोदन से ऐसे संदाय की तारीख को बढ़ा सकेगा या ऐसे संदाय को सम्मुचित प्रतिभूति या वैक प्रत्यामुक्ति पर किसी द्वारा अनुज्ञात कर सकेगा।"

3. 1948 के पंजाब प्रधिनियम 46 की धारा II-व्य का संशोधन:— मूल प्रधिनियम की धारा II-व्य में “अधिगोपित शास्ति” और “इस प्रधिनियम के अधीन” शब्दों के बीच से “या देय व्याज” शब्दों का लोप किया जाएगा।

4. 1948 के पंजाब प्रधिनियम 46 में नई धारा II-व्य का प्रस्तुत:— स्थान: धारा II-व्य के पश्चात् निम्नलिखित धारा अन्तस्थित की जाएगी, अर्थात्:—

"II-व्य (1) व्याज या संदाय:— यदि कोई व्योहारी धारा 10 की उपधारा (4) की अपेक्षामुक्त उपसे शोध्य कर की रकम का संदाय करने में असफल रहेगा तो वह कर की रकम के प्रतिरिक्षण उपसे शोध्य कर की रकम पर, उप धारा की उपधारा (3) के विवरणी के प्रस्तुत किए जाने के प्रत्यक्षम सारीख के ठीक बाव की तारीख से 1 प्रतिशत प्रतिमास की दर पर, एक मास की अवधि के लिए और तत्पश्चात् डेढ़ प्रतिशत प्रतिमास की दर से, व्यतिक्रम आयू रहने तक, कर की रकम पर साधारण व्याज का संदाय करने का बाबी होगा।

(2) यदि मास की सूचना में विनियमित अवधि के भीतर व्योहारी द्वारा देय कर या शास्ति की रकम का संदाय नहीं किया जाता है या, यदि ऐसी कोई अवधि विनियमित नहीं की जाती है, वहाँ ऐसी सूचना की तामीन संपत्तीम दिन के भीतर संदाय नहीं किया जाता है तो व्योहारी, कर या शास्ति की रकम के प्रतिरिक्षण, उग तारीख के ठीक आद की तारीख से जिस पर मध्यस्थिति, सूचना में विनियमित अवधि या तीस दिन की अवधि समाप्त होती है, एक प्रतिशत प्रतिमास की दर पर, एक मास की अवधि के लिए और तत्पश्चात् डेढ़ प्रतिशत प्रतिमास की दर से, व्यतिक्रम आयू रहने तक, कर की रकम पर साधारण व्याज का संदाय करने का बाबा होगा।

परन्तु यहाँ किसी कर या शास्ति की कम्भूरी किसी लायालय के शावेश द्वारा अवधित कर दी जाती है, यदोंकर या शास्ति की रकम स्वयंस शावेश रह कर दिया जाने के पश्चात् उप रकम पर जो अस्ततः देय पायी जाती है, पूर्वोक्त दर पर व्याज सहित अभूतीय होती और ऐसा व्याज उप तारीख से जिसको कर या शास्ति पहनी वारं देय होती है, संशय होगा।

(3) इस धारा के अर्धीन सदैय व्याज की रकम:—

(i) किसी मास के भाग को एक मास और यी साल से कम रकम की सीकाए मानकर संगणित की जाएगी;

(ii) संग्रहण और बमूली के प्रयोगत्व के लिए, इस प्रधिनियम के अधीन वर समझी जाएगी;

(iii) इस प्रधिनियम के अधीन अधिगोपित शास्ति, यदि कोई हो, के प्रतिभूति होती है।

स्पष्टीकरण:— नहीं कर की रकम का कोई संदाय किसी व्योहारी द्वारा चंडीगढ़ से किया जाता है और उसका विवरण वैक द्वारा अनादर कर दिया जाता है तो वह उप व्योहारी की ओर से कर की रकम का संदाय करने में असफल रहने की ओहि ये आवेदन।

5. 1948 के पंजाब अधिनियम 46 की धारा 12 का प्रतिस्थापन मूल अधिनियम की धारा 12 के स्थान पर निम्नलिखित धारा रखी जाएगी अर्थात् :—

“12-(1) प्रतिदाय :—निर्धारण प्राधिकारी विहित रीत में इस निमित्त अवेदन करने वाले किसी रजिस्ट्रीकृत व्यौहारी को उसके द्वारा इस अधिनियम के अधीन संदर्भ किसी कर, व्याज या शास्ति की रकम का प्रतिदाय तब करेगा;

(क) यदि इस प्रकार संदर्भ कर, शास्ति या व्याज की रकम इस अधिनियम के अधीन उससे शोध्य रकम से अधिक है, या

(ख) यदि इस प्रकार संदर्भ कर की रकम किसी घोषित माल के विक्रय या क्रेय की बाबत है और ऐसा माल या तो प्रतिदाय बाउचर द्वारा या किसी अन्य अवधि की बाबत व्यौहारी से शोध्य रकम के साथ इस प्रकार संदर्भ रकम का सामायोजन करके व्यौहारी के विकल्प पर, अन्तर्राजिक व्यापार या वाणिज्य के अनुक्रम में विक्रीत किया जाता है;

परन्तु खण्ड (ख) के अधीन प्रतिदाय ऐसी शर्तों के जो विहित की जाए, अधीन होगा;

परन्तु यह और कि इस धारा के अधीन कोई प्रतिदाय तब तक अनुज्ञात नहीं किया जाएगा जब तक कि प्रतिदाय के लिए दावा उस तारीख से जिसको ऐसा दावा प्रतिभूत होता है, तीन वर्ष की अवधि के भीतर न किया गया होगा।

स्पष्टीकरण :—इस उपधारा के प्रयोजनों के लिए “अन्तर्राजिक व्यापार या वाणिज्य के अनुक्रम में” पद का वही अर्थ होगा जो इसे केन्द्रीय विक्रय-कर अधिनियम, 1956 की धारा 3 में समनुदेशित है।

(2) उपधारा (1) में किसी वात के होते हुए भी, निर्धारण प्राधिकारी सर्वप्रथम प्रतिदाय की जाने वाली रकम को ऐसे सामायोजन की तारीख पर व्यौहारी से देते किसी रकम की वसूली के मध्य समझेजित करेगा और तत्पश्चात् प्रतिशोष, यदि कोई हो, का प्रतिदाय करेगा।

(3) जहाँ इस अधिनियम के अधीन जारी किए गए किसी आदेश के आधार पर निर्धारण प्राधिकारी द्वारा किसी व्यक्ति को प्रतिदाय किए जाने के लिए अपेक्षित किसी रकम के आदेश की तारीख के नब्बे दिन के भीतर उसे प्रतिदाय नहीं किया जाता है तो व्यौहारी उक्त अवधि की समाप्ति की तारीख की ठीक अगली तारीख से एक प्रतिशत प्रतिमास की दर पर ऐसी रकम पर साधारण व्याज प्राप्त करने का हकदार होगा;

परन्तु व्याज की संगणना के प्रयोजन के लिए किसी मास के भाग को एक मास माना जाएगा और सी रुपए से कम रकम को सौ रुपए माना जाएगा।

(4) यदि नब्बे दिन को पूर्वोक्त अवधि के भीतर प्रतिदाय अनुज्ञात करने में विलंब ऐसे कारण से है जो निर्धारण प्राधिकारी के नियंत्रण से परे है या जो पूर्णतः या भागतः व्यौहारी द्वारा किया गया माना जा सकता है, वहाँ ऐसे विलंब की अवधि की उस अवधि से अपवर्जित कर दिया जाएगा जिसके लिए व्याज संदाय है।

(5) यदि इस वारत में कोई प्रश्न पैदा होता है कि क्या कोई अवधि उपधारा (4) के अधीन व्याज की संगणना के प्रयोजनों के लिए अपवर्जित किया जाता है तो यह प्रश्न असूक्त या ऐसे अन्य अधिकारी द्वारा निर्देशित किया जाएगा जो संविधान के अनुच्छेद 239 के अधीन राष्ट्रपति द्वारा नियुक्त प्रशासक, अधिसूचना द्वारा, नियुक्त करे, जिसका विनिश्चय अन्तिम होगा।

(6) जहाँ प्रतिदाय अनुज्ञात करने वाला आदेश किसी अपील या अपियम कार्यवाहियों की सामग्री है या जहाँ इस अधिनियम के अधीन अन्य कार्यवाहियों लंबित हैं और निर्धारण प्राधिकारी की यह राय है कि प्रतिदाय से वसूली पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ने की संभावना है, वहाँ निर्धारण प्राधिकारी प्रतिदाय को विधारित कर सकता और मामले को आसूक्त निर्देशित करेगा जिसके आदेश अन्तिम हों।

(7) वह अवधि जिसके द्वारा उपधारा (6) के अधीन विधारित रहेगा इस धारा के अधीन व्याज की संगणना के प्रभीजन के लिए अपवर्जित कर दी जाएगी।

6. 1948 के पंजाब अधिनियम, 46 की धारा 13 की संशोधन,—मूल अधिनियम की धारा 13 की उपधारा (2) के खण्ड (क) में, “दस रुपए” शब्दों के स्थान पर, “पचास रुपए” शब्द रखा जाएगा।

7. 1948 के पंजाब अधिनियम, 46 की धारा 27 का संशोधन,—मूल अधिनियम की धारा 27 की उपधारा (2) के खण्ड (i) के पश्चात् निम्नलिखित खण्ड अन्तःस्थापित किया जाएगा, अर्थात् :—

“(ii) कर, शास्ति या व्याज के संदाय की रीत।”।

[का. सं पू-11015/6/88-यू दी एल]

प्रशोक नाथ, संयुक्त सचिव

MINISTRY OF HOME AFFAIRS

New Delhi, the 1st Nov., 1988

NOTIFICATION

G.S.R. 1052 (E):—In exercise of the powers conferred by section 87 of the Punjab Reorganisation Act, 1966 (31 of 1956), the Central Government hereby extends to Union territory of Chandigarh, the enactments specified in column (1) of the Schedule hereto annexed, as in force in the State of Punjab at the date of this notification, subject to the modifications specified in the corresponding entries in column (2) of the Schedule.

THE SCHEDULE

Enactment	Modifications
(1)	(2)
1. The Punjab General Sales Tax (Amendment) Act, 1973 (Punjab Act No. 14 of 1973).	1. In section 2 for the words and figures “the Punjab General Sales Tax Act, 1948”, the words and figures “the Punjab General Sales Tax Act, 1948, as in force in the Union territory of Chandigarh,” shall be substituted.
2. Section 3 shall be omitted.	In section 2, for the words and figure “the Punjab General Sales Tax Act, 1948”, the words and figures “the Punjab General Sales Tax Act, 1948, as in force in the Union territory of Chandigarh,” shall be substituted.

1	2	1	3
3. The Punjab General Sales Tax (Amendment and Validation) Act, 1976 (Punjab Act No. 11 of 1976).	<p>1. In section 1, sub-section (2) shall be omitted.</p> <p>2. In section 2,—</p> <p>(i) for the words and figures "the Punjab General Sales Tax Act, 1948", the words and figures "the Punjab General Sales Tax Act, 1948, as in force in the Union territory of Chandigarh," shall be substituted; and</p> <p>(ii) the words "and shall always be deemed to have been" shall be omitted.</p> <p>3. In section 3, the words "and shall always be deemed to have been" shall be omitted.</p> <p>4. Sections 4 and 5 shall be omitted.</p>	<p>1. In section 1, sub-section (2) shall be omitted.</p> <p>2. In section 2, for the words and figures "the Punjab General Sales Tax Act, 1948", the words and figures "the Punjab General Sales Tax Act, 1948, as in force in the Union territory of Chandigarh," shall be substituted.</p> <p>3. Sections 8 and 9 shall be omitted.</p>	<p>(Amendment and Validation) Act, 1978 to the Union territory of Chandigarh" shall be substituted.</p>
4. The Punjab General Sales Tax (Amendment and Validation) Act, 1978 (Punjab Act No. 2 of 1978).	<p>1. In section 1, sub-section (2) shall be omitted.</p> <p>2. In section 2, for the words and figures "the Punjab General Sales Tax Act, 1948", the words and figures "the Punjab General Sales Tax Act, 1948, as in force in the Union territory of Chandigarh" shall be substituted.</p> <p>3. In section 3,—</p> <p>(i) for the words and figures "the 1st day of April, 1973," the words and figures "the date of extension of the Punjab General Sales Tax (Amendment and Validation) Act, 1978 to the Union territory of Chandigarh," shall be substituted; and</p> <p>(ii) for the word "State" wherever it occurs, the words "Union territory of Chandigarh" shall be substituted.</p> <p>4. In section 5, for the words, brackets and figures "before the commencement of the Punjab General Sales Tax (Amendment and Validation) Act, 1978" wherever they occur, the words, brackets and figures "before the extension of the Punjab General Sales Tax</p>	<p>1. In section 1, sub-section (2) shall be omitted.</p> <p>2. In section 2, for the words and figures "the Punjab General Sales Tax Act, 1948, as in force in the Union territory of Chandigarh" shall be substituted.</p> <p>3. In section 5, for the words "State Government", the words "Administrator appointed by President under article 239 of the Constitution" shall be substituted.</p> <p>4. Section 8 shall be omitted.</p>	

ANNEXURE-I

THE PUNJAB GENERAL SALES TAX (AMENDMENT) ACT, 1973 (PUNJAB ACT NO. 14 OF 1973) AS EXTENDED TO THE UNION TERRITORY OF CHANDIGARH

An Act to amend the Punjab General Sales Tax Act, 1948.

Be it enacted by the Legislature of the State of Punjab in the Twenty-fourth Year of the Republic of India as follows :

1. Short title.—This Act may be called the Punjab General Sales Tax (Amendment) Act, 1973.
2. Amendment of section 4 of Punjab Act XLVI of 1948.—In the Punjab General Sales Tax Act, 1948, as in force in the Union Territory of Chandigarh, in section 4, in sub-section (5),—
 - (i) in clause (bb), for the figure and word "25,000 rupees" the figure and word "40,000 rupees" shall be substituted; and
 - (ii) in clause (d), for the figure and word "40,000 rupees" the figure and word "1,00,000 rupees" shall be substituted.

ANNEXURE-II

THE PUNJAB GENERAL SALES TAX (SECOND AMENDMENT) ACT, 1973 (PUNJAB ACT NO. 29 OF 1973) AS EXTENDED TO THE UNION TERRITORY OF CHANDIGARH

An Act to amend the Punjab General Sales Tax Act, 1948.

Be it enacted by the Legislature of the State of Punjab in the Twenty-fourth Year of the Republic of India as follows :—

1. Short title.—This Act may be called the Punjab General Sales Tax (Second Amendment) Act, 1973.

2. Insertion of new section 5A in Punjab Act XLVI of 1948.—In the Punjab General Sales Tax Act, 1948, as in force in the Union Territory of Chandigarh, after section 5, the following section shall be inserted, namely :—

“5A Levy of additional Tax.”—(1) Notwithstanding anything contained in this Act, there shall be levied and collected on the taxable turnover of a dealer, an additional tax which shall be calculated at the rate of two per centum of the tax payable by him under this Act :

Provided that the aggregate of the tax and surcharge payable under this Act, shall not exceed in respect of goods declared to be of special importance in inter-State trade or commerce by section 14 of the Central Sales Tax Act, 1956, the rate fixed by section 15 of that Act.

(2) Except as otherwise provided in sub-section (1), the provisions of this Act shall, so far as may be, apply in relation to the additional tax leviable under sub-section (1) as they apply in relation to the tax leviable under any other provision of this Act.”

ANNEXURE-III

THE PUNJAB GENERAL SALES TAX (AMENDMENT AND VALIDATION) ACT, 1976 (PUNJAB ACT NO. 11 OF 1976) AS EXTENDED TO THE UNION TERRITORY OF CHANDIGARH

An Act to amend the Punjab General Sales Tax Act, 1948.

Be it enacted by the Legislature of the State of Punjab in the Twenty-seventh Year of the Republic of India as follows :—

1. Short title and commencement.—(1) This Act may be called the Punjab General Sales Tax (Amendment and Validation) Act, 1976.

2. Amendment of section 5 of Punjab Act 46 of 1948.—In section 5 of the Punjab General Sales Tax Act, 1948, as in force in the Union Territory of Chandigarh (hereinafter referred to as the principal Act), in the first proviso, the word “luxury” shall be omitted.

3. Amendment of Schedule A appended to Punjab Act 46 of 1948.—In Schedule A appended to the principal Act, the word “LUXURY” shall be omitted.

ANNEXURE-IV

THE PUNJAB GENERAL SALES TAX (AMENDMENT AND VALIDATION) ACT, 1978 (PUNJAB ACT NO. 2 OF 1978) AS EXTENDED TO THE UNION TERRITORY OF CHANDIGARH

An Act to amend the Punjab General Sales Tax Act, 1948.

Be it enacted by the Legislature of the State of Punjab in the Twenty-ninth Year of the Republic of India as follows :—

1. Short title and commencement.—(1) This Act may be called the Punjab General Sales Tax (Amendment and Validation) Act, 1978.

2. Amendment of Punjab Act 46 of 1948.—In the Punjab General Sales Act, 1948, as in force in the Union Territory of Chandigarh, (hereinafter referred to as the principal Act), for the words “Assistant Excise and Taxation Officer” wherever occurring the words “Excise and Taxation Officer” shall be substituted.

3. Amendment of section 5 of Punjab Act 46 of 1948.—In section 5 of the principal Act, after sub-section (1A), the following sub-section shall be inserted, namely :—

“(1-B) On and with effect from the date of extension of the Punjab General Sales Tax (Amendment and Validation) Act, 1978 to the Union Territory of Chandigarh, tax on margarine under sub-section

(1) shall be levied at the first stage of sale thereof which stage shall,—

(a) in the case of a dealer who brings into the Union Territory of Chandigarh margarine from any place outside the Union Territory of Chandigarh, be the stage of sale when such dealer sells margarine in the first time within the Union Territory of Chandigarh;

(b) in the case of a dealer who manufactures margarine within the Union Territory of Chandigarh be the stage of sale when such dealer sells margarine for the first time in the Union Territory of Chandigarh; and

(c) in the case of any other dealer who has not purchased margarine from the dealer referred to in the preceding clause, be the stage at which such dealer sells margarine for the first time in the Union Territory of Chandigarh ;

Provided that no sale of margarine at a subsequent stage shall be exempted from tax under this Act unless the dealer effecting the sale at such subsequent stage furnishes to the assessing authority in the prescribed form and manner a certificate duly filled and signed by the registered dealer, from whom the margarine was purchased.”.

4. Amendment of section 10 of Punjab Act 46 of 1948.—In section 10 of the principal Act, in sub-section (4), for the words “District Excise and Taxation Officer”, the words “District Excise and Taxation Office” shall be substituted.

5. Insertion of new section 11-AAAA in Punjab Act, 46 of 1948.—After section 11-AAA of the principal Act, the following section shall be inserted, namely :—

“11.aaaa Review of certain assessments of tax on margarine and validation of certain assessments.—

(1) Notwithstanding anything contained in this Act, the assessing authority shall review such assessments, reassessments made before the extension of the Punjab General Sales Tax (Amendment and Validation) Act, 1978 to the Union Territory of Chandigarh, as are not in conformity with the Provisions of this Act as amended by the aforesaid aforesaid Act; Act, and make such order varying or revising the order previously made as may be necessary for bringing the order previously made into conformity with the provisions of this Act as amended by the aforesaid Act :

Provided that no order shall be made under this section against any dealer without giving him an opportunity of being heard.

(2) Notwithstanding anything contained in any judgement, decree or order of any court or other authority to the contrary but subject to the provisions of sub-section (1), any assessment, reassessment, levy or collection of any tax in respect of margarine made or purporting to have been made, and any action or thing taken or done or purporting to have been taken or done in relation to such assessment, reassessment, levy or collection under the provisions of this Act before the extension of the Punjab General Sales Tax (Amendment and Validation) Act, 1978 to the Union Territory of Chandigarh, shall be as valid and effective as if such assessment, reassessment, levy or collection or action or thing had been made, taken or done under this Act as amended by the Punjab General Sales Tax (Amendment and Validation) Act, 1978..

(3) For the removal of doubts it is hereby declared that nothing in sub-section (2) shall be construed as preventing any person—

(a) from questioning in accordance with the provisions of the Act and Rules made thereunder, the assessment, reassessment, levy or collection of tax on margarine for any period, or

(b) from claiming refund of any tax paid by him in excess of the amount due from him under the Act as amended by the Punjab General Sales Tax (Amendment and Validation) Act, 1978.”.

6. Amendment of section 14-B of Punjab Act, 46 of 1948.—In section 14-B of the principal Act, in the proviso to sub-section (6), for the words “Excise and Taxation Officer of the district”, the words “Assistant Excise and Taxation Commissioner in-charge of the district” shall be substituted.

7. Amendment of section 23 of Punjab Act 46 of 1948.—In section 23 of the principal Act, in sub-section (2), for the words “of the rank of Excise and Taxation Officer”, the words “not below the rank of Excise and Taxation Officer” shall be substituted.

ANNEXURE-V

THE PUNJAB GENERAL SALES TAX (SECOND AMENDMENT) ACT, 1978 (PUNJAB ACT NO 26 OF 1978) AS EXTENDED TO THE UNION TERRITORY OF CHANDIGARH

An Act to amend the Punjab General Sales Tax Act, 1948.

Be it enacted by the Legislature of the State of Punjab in the Twenty-ninth Year of the Republic of India as follows:—

1. Short title and commencement.—(1) This Act may be called the Punjab General Sales Tax (Second Amendment) Act, 1978.

2. In the Punjab General Sales Tax Act, 1948, as extended to the Union Territory of Chandigarh (hereinafter referred to as the principal Act), in section 11, for sub-section (7), the following sub-section shall be substituted, namely :—

“(7) The amount of any tax, penalty or interest payable under this Act shall be paid by the dealer in the manner prescribed by such date as may be specified in the notice issued by the assessing authority for the purpose and the date so specified shall not be less than fifteen days and not more than thirty days from the date of service of such notice :

Provided that the assessing authority may, with the prior approval of the Assistant Excise and Taxation Commissioner, in-charge of the district, extend the date of such payment or allow payment by instalments against an adequate security or Bank guarantee.”.

3. Amendment of section 11-B of Punjab Act 46 of 1948.—In the principal Act, in section 11B, between the words “penalty imposed” and “under this Act” the words “or interest payable” shall be inserted.

4. Insertion of new section 11-D in Punjab Act, 46 of 1948.—After section 11-C, the following section shall be inserted, namely:—

“11-D Payment of Interest.—(1) If any dealer fails to pay the amount of tax due from him as required by sub-section (4) of section 10, he shall, in addition to the amount of tax, be liable to pay simple interest on the amount of tax due from him at the rate of one per centum per month from the date immediately following the last date for the submission of the return under sub-section (3) of that section, for a period of one month and thereafter at the rate of one and a half per centum per month till the default continues.

(2) If the amount of tax or penalty due from a dealer is not paid by him within the period specified in the notice of demand or, if no period is specified, within thirty days from the service of such notice, the dealer shall in addition to the amount of tax or penalty, be liable to pay simple interest on such amount at the rate of one per centum per month from the date immediately following the date on

which the period specified in the notice or the period of thirty days, as the case may be, expires, for a period of one month and thereafter at the rate of one and a half per centum per month till the default continues ;

Provided that where the recovery of any tax or penalty is stayed by an order of any court, the amount of tax or penalty shall, after the order of stay is vacated, be recoverable along with interest at the aforesaid rate on the amount ultimately found to be due and such interest shall be payable from the date the tax or penalty first became due.

(3) The amount of interest payable under this section shall—

- (i) be calculated by considering part of a month as one month and any amount less than one hundred rupees as one hundred rupees;
- (ii) for the purposes of collection and recovery, be deemed to be tax under this Act ;
- (iii) be in addition to the penalty, if any, imposed under this Act.”.

Explanation.—If payment of the amount of tax is made by any dealer through cheque and the same is dishonoured by the bank concerned it will amount to failure on the part of the dealer to pay the amount of tax.

5. Substitution of section 12 of Punjab Act 46 of 1948.—In the principal Act, for section 12, the following section shall be substituted, namely :—

“12 Refund.—(1) The assessing authority shall in the prescribed manner refund to a registered dealer applying in this behalf any amount of tax, interest or penalty paid by such dealer under this Act,—

- (a) if the amount of tax, penalty or interest so paid is in excess of the amount due from him under this Act; or
- (b) if the amount of tax so paid is in respect of the sale or purchase of any declared goods and such goods are sold in the course of inter-state trade or commerce, either by a refund voucher or, at the option of the dealer by adjustment of the amount so paid with the amount due from him in respect of any other period ;

Provided that the refund under clause (b) shall be subject to such conditions, as may be prescribed:

Provided further that no refund under this section shall be allowed unless the claim for refund is made within a period of three years from the date on which such claim accrues.

Explanation.—For the purposes of this sub-section the expression “in the course of inter-State trade or commerce” shall have the meaning assigned to it by section 3 of the Central Sales Tax Act, 1956.

(2) Notwithstanding anything contained in sub-section (1), the assessing authority shall first adjust the amount to be refunded towards the recovery of any amount due from the dealer on the date of such adjustment, and shall thereafter refund the balance, if any.

- (3) Where any amount required to be refunded by the assessing authority to any person by virtue of an order issued under this Act is not refunded to him within ninety days of the date of the order, the dealer shall be entitled to get simple interest on such amount at the rate of one per centum per month from the date immediately following the date of expiry of the said period for a period of one month and thereafter at the rate of one and a half per centum per month till the refund is made: Provided that for the purpose of calculation of the interest, part of a month shall be considered as one month and any amount less than one hundred rupees shall be considered as one hundred rupees.

- (4) If the delay in allowing refund within the aforesaid period of ninety days is for reasons beyond the control of the assessing authority or attributable to the dealer, whether wholly or in part, the period of such delay shall be excluded from the period for which interest is payable.
- (5) If any question arises whether any period is to be excluded for the purposes of calculation of interests under sub-section (4) the same shall be referred to the Commissioner or such other officer as the Administrator appointed by the President under article 239 of the Constitution may, by notification, appoint, whose decision shall be final.
- (6) Where an order allowing refund is the subject matter of an appeal or further proceedings or where any other proceedings under this Act are pending, and the assessing authority is of the opinion

that the refund is likely to adversely affect the recovery, the assessing authority may withhold the refund and refer the case to the Commissioner whose orders shall be final.

- (7) The period during which the refund remains withheld under sub-section (6) shall be excluded for the purpose of calculation of interest under this section."

6. Amendment of section 13 of Punjab Act 46 of 1948.— In the principal Act, in section 13, in sub-section (2), in clause (a), for the words "ten rupees", the words "twenty-five rupees" shall be substituted.

7. Amendment of section 27 of Punjab Act 46 of 1948.— In the principal Act, in section 27, in sub-section (2), after clause (i), the following clause shall be inserted namely :—

- (ii) the manner of payment of tax, penalty or interest".

[No. U-11015/6/82-UTL]

ASHOK NATH, Jr. Secy.

